Osgood-Schramm's Model of Communication

ऑसगुड–पिल्बर श्राम का संचार प्रारूप

Dr. Archana Bharti
Guest Faculty, MJMC
Sem-1, Paper- 101
Date- 29/06/2021

Osgood-Schramm's Model of Communication

- चार्ल्स ई. आसगुड एवं विल्बर श्राम (Charles E. Osgood & Wilbur Schramm) ने वर्ष 1954 में अपने संचार प्रारूप को विकसित किया जो पहले के प्रारूपों से भिन्न है।
- इन्होंने अपने संचार के प्रतिरूप को 'सरकुलर मॉडल' (Circular Model) कहा। चार्ल्स ई. आसगुड एक मनोभाषा विज्ञानी (Psychology of Language) थे। इन्होंने शैनन–वीवर के मॉडल को तकनीकी मॉडल माना।
- शैनन और वीवर का मॉडल एकरेखीय (Linear) था।

Osgood-Schramm's Model of Communication

- शैनन और वीवर ने जहां अपने गणितीय प्रारूप में सम्प्रेषक और ग्रहीता के बीच **''चैनल''** पर जोर दिया वहीं आसगुड–श्राम के **'सरकुलर मॉडल'** में संचार प्रक्रिया के मुख्य तत्वों जैसे कि सम्प्रेषक और ग्रहीता के **''व्यवहार''** पर ज्यादा जोर दिया गया।
- शैनन और वीवर ने रिसीवर और ट्रांसमीटर के रूप में तकनीकी कार्य को प्रमुख बताया, वहीं आसगुड–श्राम ने 'इनकोडिंग' और 'डिकोडिंग' के रूप में **''इंटरप्रेटर''** के व्यवहार और उसके भूमिका की व्याख्या प्रस्तुत की।

Osgood-Schramm's Model of Communication

- ऑसगुड एवं विल्बर श्राम के अनुसार, सेंडिंग और रिसीविंग, दोनों कार्य अलग–अलग नहीं है, बल्कि एक ही समय में एक व्यक्ति दोनों काम करता है।
- इस मॉडल में संदेश भेजनेवाला और संदेश को प्राप्त करने वाला, दोनों को **"इटरप्रेटर"** कहा गया। इसके अनुसार, इंटरप्रेटर जब किसी संदेश को किसी कोडिंग के रूप में भेजता है, तब वह **'इनकोडर'** होता है और उस संदेश को प्राप्त करनेवाला एक **'डिकोडर'** होता है जो उस संदेश का अर्थ समझने के रूप में 'इंटरप्रेटर' की भूमिका निभाता है।

Osgood-Schramm's Model of Communication

- इस प्रारूप के अनुसार, एक समय ऐसा आता है, जब संदेश सम्प्रेषित करने वाला संचारक की भूमिका बदलकर प्रापक की और कुछ देर बाद फिर संचारक की हो जाती है। इसी प्रकार संदेश ग्रहण करने वाला प्रापक की भूमिका भी इसी तरह बदलकर संचारक और बाद में फिर प्रापक की हो जाती है।
- इस प्रकार दोनों व्यक्ति **'इंटरप्रेटर'** होते हैं जो 'इनकोडर' और 'डिकोडर' दोनों की भूमिका निभाते हैं। इसमें संचार निरंतर चलता है, इसलिए इसे **'सर्कुलर मॉडल'** कहा गया। इस प्रारूप को आगे रेखाचित्र के माध्यम से समझा जा सकता है।

Osgood-Schramm's Model of Communication

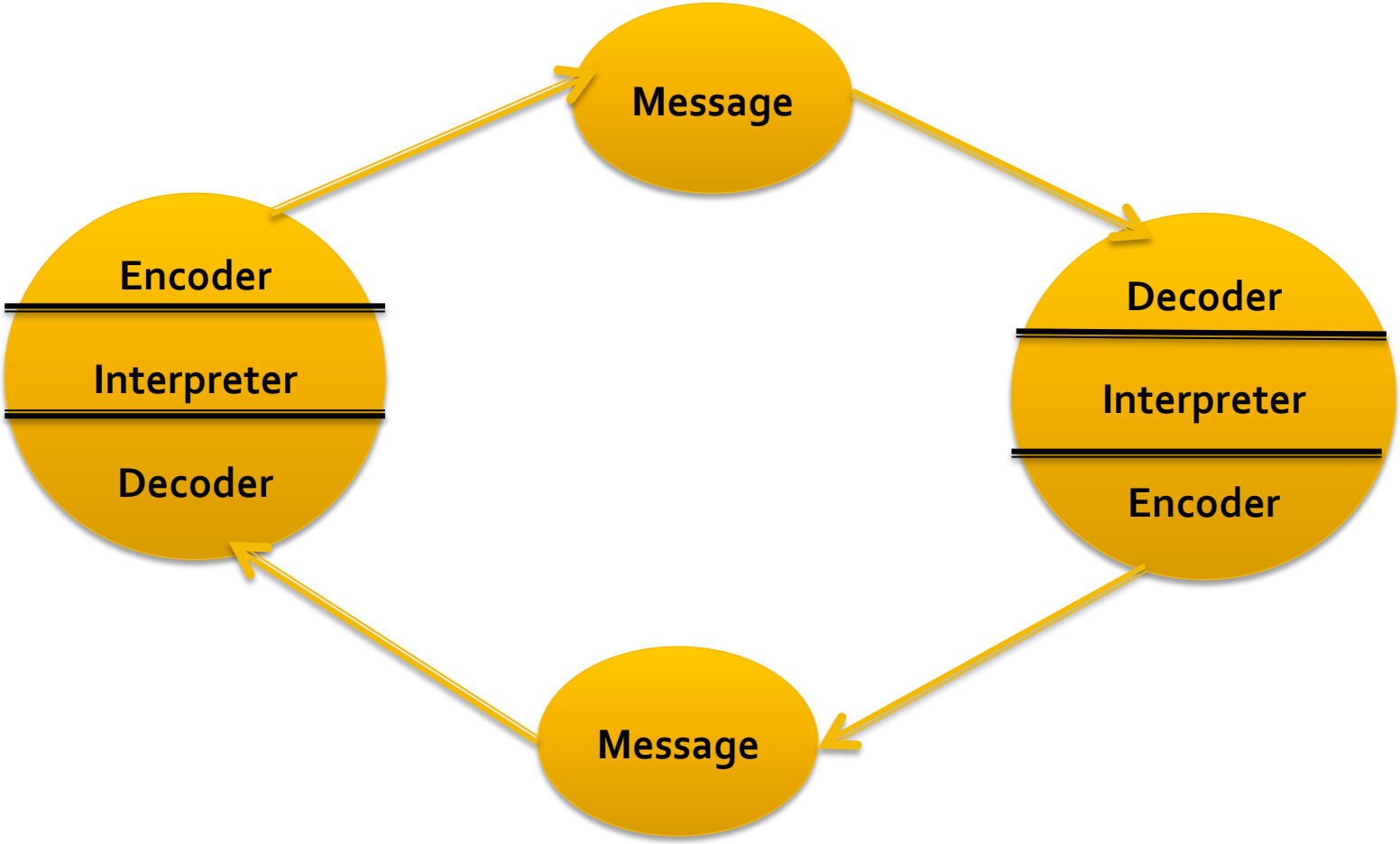

Osgood-Schramm's Model of Communication

- संचार के एकरेखीय मॉडल के कारण संचार को बेहद सरल रूप में देखा जाता था। लेकिन **'सरकुलर मॉडल'** ने संचार की प्रक्रिया को गहराई से देखने और समझने की प्रवृत्ति को बढ़ाया, जिसके कारण यह मॉडल काफी महत्वपूर्ण है। यह मॉडल विशेष रूप से **अंतरवैयक्तिक संचार** को समझने में विशेष भूमिका निभाता है।
- परन्तु इसमें फीडबैक का तत्व मौजूद नहीं होने के कारण यह मॉडल कारगर नहीं हो पाया, और विल्बर श्राम ने पुनः एक नया मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें **'जनसंचार'** को समझने की कोशिश की गई।